“रजनी गुप्त के उपन्यासों में स्त्री-अस्मिता के सवाल”

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा
की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशक

प्रो० (डॉ०) उमेश कुमार
विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधप्रज्ञा :

दिव्या भारती
पिता– प्रीतम राय
ग्राम– शुभंकरपुर महाराजीपुल,
पो०– शुभंकरपुर,
थाना– नगर, जिला– दरभंगा
पैट क्रमांक- 22090132

1) **प्रस्तावित शोध-प्रारूप का शीर्षक:–**

“रजनी गुप्त के उपन्यासों में स्त्री-अस्मिता के सवाल”

2) **प्रस्तावना :–**

सदियों से चली आ रही पितृसत्ता के अंतर्गत स्त्री-जाति पुरुष के अधीन रही है। पुरुष ने सदैव स्त्री के जीवन से संबद्ध विभिन्न आयामों, यथा- उसके जीवन, कार्य-शैली एवं भागीदारी को निर्धारित किया है। स्त्री की सामाजिक पहचान, उसके जीवन से संबंधित महत्त्वपूर्ण निर्णयों को लेने में उसकी क्षमता को पुरुष-समाज अक्सर नजरअंदाज करता है। विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक कारणों से स्त्रियों को पुरुषों के बराबर सम्मान नहीं दिया जाता रहा है। ‘स्त्री-अस्मिता’ इस वर्चस्ववादी व्यवस्था की जकड़ से बाहर निकलने तथा अपनी पहचान बनाने के लिए किये गए अविरल संघर्ष का परिणाम है।

भारतीय समाज में स्त्री का अस्तित्व, उसकी पहचान कैसे व किन मानदंडों के आधार पर तय किया जायेगा...? स्त्री की पहचान या उसके अस्तित्व का मूल्यांकन स्त्री करेगी या पुरुष करेगा या दोनों मिलकर करेंगे, इस प्रश्न पर हमें गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा, क्योंकि एकतरफा मूल्यांकन आदर्शपरक तो हो सकता है, तथापि वास्तविकता से कोसों दूर हो जायेगा।

किसी भी सभ्य समाज की सभ्यता संस्कार तथा समृद्धि का वास्तविक आकलन उस समाज में स्त्रियों की स्थिति के आधार पर किया जा सकता है। अपनी सामाजिक भूमिका को लेकर अपना मत रखना शुरू कर वहॉं से स्त्री-विमर्श और स्त्री-अस्मिता के सवालों को उठाना स्वाभाविक है। स्त्री-अस्मिता का प्रश्न रूढ़ियों, परंपराओं जो कि उसके प्रति भेदभाव को उत्पन्न करता है, उसके खिलाफ मुखर अभिव्यक्ति प्रदान करता है। स्त्री-अस्मिता के प्रश्न पर आज यह मांग उठना स्वाभाविक

है कि क्यों स्त्रियाँ अपने मुद्दों, अवस्थाओं और समस्याओं के बारे में अपनी सोच नहीं व्यक्त कर सकती हैं। स्त्री-अस्मिता के मुद्दों को यदि देखें तो उसके केंन्द्र में मुट्ठीभर स्त्रियाँ ही स्थान बना पायी हैं। समाज के कमजोर वर्गों की स्त्रियों का जिक्र बहुत सीमित मात्रा में होता है।

'स्त्री-अस्मिता' एक व्यापक अवधारणा है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक स्त्री को उसकी शारीरिक और बौद्धिक क्षमता का विकास, प्रदर्शन और प्रयोग पर पूरी आधिकारिकता प्रदान करने पर बल दिया जाता है। पुरुषवादी वर्चस्व के कारण विकास और शक्ति की दौड़ में स्त्री को जबरन पीछे धकेल देने के लिए सांस्कृतिक एवं सामाजिक ताना-बाना बुना जाता है। समाज की आधी आबादी इस प्रकार की अन्यायपूर्ण व्यवस्था का शिकार है। स्त्रियों को समाज में उनका स्थान प्रदान किया जाय। स्त्री-अस्मिता का विचार स्त्री और पुरूष दोनों को समानता के अवसर प्रदान किये बिना संभव नहीं है। पुरुष-प्रधान समाज स्त्री को व्यक्ति के बजाय वस्तु की संज्ञा देता है और उसे इसी भॉंति देखता रहा है। आज के परिवेश में शिक्षा, जनसंचार तथा संवैधानिक आधिकार के माध्यम से स्त्रियों में जागरूकता का संचार हुआ है। वे अपने खिलाफ होने वाले तमाम अन्याय के प्रति, भाई और पति की मानसिकता के विरूद्ध अपनी पहचान को कायम करने के लिए संघर्ष करती हुई देखी जाती हैं। आज के समय में प्रमुखतः आर्थिक आत्म-निर्भरता तथा सत्ता में भागीदारी बढ़ रही है। फिर भी यह अपेक्षाकृत बहुत कम है।

समकालीन हिन्दी उपन्यासों में जिन स्त्री रचनाकारों ने स्त्री-अस्मिता के सवाल को मुखर बनाया, उनमें रजनी गुप्त का नाम अत्यन्त सम्मान के साथ लिया जाता है। रजनी गुप्त के अब तक सात उपन्यास 'कहीं कुछ और' (2002 ई०) 'किशोरी का आसमॉं' (2005 ई०) 'एक न एक दिन' (2008 ई०), 'तिराहे पर तीन' (2022 ई०), 'कितने कठघरे' (2015 ई०), 'कुल जमा बीस' (2012 ई०), 'ये आम रास्ता नहीं है' (2013 ई०) प्रकाशित हैं। 'कहीं कुछ और' में एक ऐसे आधुनिक

परिवार की कहानी है, जिसमें पति (रजत), पत्नी (रचना) और बेटी कुल तीन प्राणी हैं। रचना अपने ढंग से जीना चाहती है। स्त्री-स्वतंत्रता की वकालत करने वाला रजत रचना को मुक्त नहीं कर पाता। रचना अपनी पहचान बनाने के लिए निरन्तर संघर्षरत रहती है। उसका यह संघर्ष ही उपन्यास की गति और दिशा प्रदान करता है। इस उपन्यास में स्त्री–अस्मिता के कई गंभरी सवाल उठाये गये हैं।

'किशोरी का आसमाँ' नामक उपन्यास में लेखिका ने कथा नायिका किशोरी को केन्द्र में रखकर आधुनिक समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्षशील स्त्री की गाथा अंकित की है। दो पीढ़ियों के अनेक स्त्री-पात्रों के सुख-दु:खमय जीवन को उकेरती हुई इस उपन्यास की कहानी को भले ही स्त्री-विमर्श की कहानी न कहा जाए, किन्तु इसे नारी-अस्मिता की खोज की कहानी तो कहा ही जा सकता है।

'कुल जमा बीस' उपन्यास में तीन पीढ़ियों के बदलते जीवन-मूल्यों के साथ उनकी बदलती अभिलाषाओं, आकांक्षाओं का चित्रण है। उपन्यास की मुख्य कथा आशु के इर्द-गिर्द घूमती है। उपन्यास का उद्देश्य भ्रमित आयु के त्रासद जीवन को दिखाना है। पापा की मौत के बाद उसकी मम्मी दूसरी शादी कर लेती हैं। इसे किशोरवय आशु बर्दाशत नहीं कर पाता। वह मम्मी को दूसरी शादी करने से रोकता भी है। ऐसे परिवेश में उसे अपनी जिन्दगी बेगानी और उद्देश्यहीन लगती है। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि किस तरह फेसबुक, वाट्सप, टेलीग्राम, ई-मेल आदि के जरिये आज की पीढ़ी दोस्ती करता है और कुछ दिनों मौज-मस्ती करके एक–दूसरे से अलग हो जाती है। आज वर्चुअल दुनिया में जीने वाली पीढ़ी के लिए रिश्तों और सम्बधों की परिभाषा बदल गई है।

अपना यौन साथी बदलना उनके लिए महज एक खेल हो चुका है। आशु का ऐसे लड़कों से सामना होता है जो बिना मेहनत किए अनर्गल तरीके से एक रात में करोड़पति बनने का सपना देखते हैं। वर्चुअल दुनिया में डूबकर जीने वाला आशु भी कई लड़कियों से सेक्स से लेकर फैशन

तक की बातें खुलकर करता है और उनसे वास्तविक जीवन में भी उसी तरह मिलता है। यह उपन्यास में आशु जैसे भ्रमित समाज में जीने वाले लड़के की कहानी है, जो हर तरह की नैतिकताओं, मूल्यों, वर्जनाओं को तोड़कर हर पल जीने की लालसा में बहुत कुछ अनर्गल करते रहते हैं। इस उपन्यास में स्त्री-पुरुष के वैध-अवैध संबंध के बहाने लेखिका स्त्री-विमर्श के नये संदर्भों का उद्घाटन करती है।

'ये आम रास्ता नहीं हैं' उपन्यास एक महिला मृदु के संघर्ष की कहानी है जो राजनीति में आ गई है और अब अपने हिस्से की जमीन तलाश रही है। सत्ता का खेल जिसे 'पावर गेम' कहा जाता है, उसमें अपनी उँगलियों के सिर पर जादुई शक्ति की ताकत उत्पन्न करने के लिए मृदु कहाँ-कहाँ से गुजरती है और क्या-क्या देखती है? इसी की कहानी है 'ये आम रास्ता नहीं है।' उपन्यास का शीर्षक लेखिका ने बहुत सोच-समझ कर रखा है। राजनीति का यह रास्ता पुरुषों के लिए ही आम नहीं होता तो महिलाओं की तो बात ही अलग है। राजनीति में किसी स्त्री की सफलता के लिए बहुत जरूरी है कि वह प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी हो या हो या खूबसूरत हो या राजनीति में उसकी जड़ें गहरी हो और अगर इसमें से कोई गुण नहीं है तो वह स्त्री राजनीति में सुप्रीम पावर द्वारा सीधे-सीधे बिस्तर में खींच लिया जाएगा। उपन्यास में मृदु के परिवारिक जीवन की कहानी भी लेखिका ने चित्रित किया है। मृदु का पारिवारिक जीवन बहुत ठीक नहीं है। मृदु राजनीति में संघर्ष कर रही है। पति सरकारी अधिकारी हैं और उसे राजनीति में अपने किसी शक्ति–केन्द्र की आवश्यकता हमेशा रहती है। वही पति जो मृदु को अपने अफसरों, दोस्तों तथा अच्छी पोस्टिंग के लिए मंत्री के सामने प्रस्तुत करने की कोशिश में लगा रहता है। अब उसी पति को मृदु के चरित्र में गन्दगी नजर आने लगती है, क्योंकि पहले जो कुछ वो करना चाह रहा था। वो अपने फायदे के लिए था, जिसे वह परिवार के हित में बताकर मृदु को साधना चाह रहा था। उपन्यास का मुख्य बिन्दु यही है। पति अपनी पत्नी को, उसके शरीर को अपनी हित में तो उपयोग करना चाहता है। पत्नी की असहमति उसे ऐसा करने नहीं देती।

मृदु पूरे उपन्यास में देह को बचा कर चलती है। मृदु की लड़ाई दोनों मोर्चे पर है। घर में भी और बाहर भी। उपन्यास में मृदु अपनी देह का कहीं उपयोग नहीं होने देती। न स्वयं के लिए न अपने पति के लिए, न अपने गाईड गजेन्द्र के लिए। राजनीति के गलियारे में बिछे हुए लाल सुनहरे कालीनों को उठाकर उनके नीचे की गन्दगी को सामने लाने का प्रयास है यह उपन्यास बताता कि वो चाहे कोई भी क्षेत्र ही स्त्री की पहचान केवल और केवल देह ही है। इस उपन्यास में स्त्री–विमर्श है, किन्तु देह-विमर्श को ही स्त्री-विमर्श मानना ठीक नहीं है।

'तिराहे पर तीन' रजनी गुप्त का बिलकुल नया उपन्यास है,जिसमें स्त्री-अस्मिता के बेहद गंभीर सवाल उठाए गये हैं। लेखिका ने अपने इस उपन्यास में तीन अलग-अलग पीढ़ी की स्त्रियों के माध्यम से भारतीय समाज में उसकी बदलती स्थितियों को दिखाने का प्रयास किया है। रजनी गुप्त के अनुसार उनके इस उपन्यास में 'आत्मस्वीकृतियाँ' नाम से अध्याय हैं, उसमें उन्होंने स्त्री-जीवन के उस आवरण को हटाने की चेष्टा की हैं, जिनको वो पारिवारिक और सामाजिक संरचना में बेहद जतन के साथ ढके रहती है। लेखिका यह प्रश्न भी उठाती है कि एक स्त्री का संघर्ष क्या है, उसके स्वप्न क्या हैं? वस्तुत: इस उपन्यास में तीन स्त्रियों के माध्यम से स्त्री के मूलभूत स्वप्नों तथा पीड़ाओं को रेखांकित किया गया है।

इस प्रकार रजनी गुप्त के लगभग सभी उपन्यासों में स्त्री–अस्मिता के सवालों को गंभीरतापूर्वक उठाया गया है। अतएव, शोध–कार्य हेतु उपर्युक्त विषय की महत्ता है।

3) प्रस्तावित विषय पर शोध–कार्य की आवश्यकता :–

प्रस्तावित विषय- 'रजनी गुप्त के उपन्यासों में स्त्री-अस्मिता के सवाल' पर इसलिए शोध-कार्य की आवश्यकता है, क्योंकि वर्तमान समय में स्त्रियों ने अपनी पहचान और अपने अस्तित्व

से संबंधित सवालों को मुखरता के साथ उठाना प्रारंभ कर दिया है। अनेक समकालीन उपन्यास लेखिकाओं की तरह ही रजनी गुप्त के उपन्यासों में ये सवाल निरंतर उठाए जा रहे हैं। रजनी गुप्त ने स्त्री-जीवन से संबंधित कई अनछुए पहलुओं पर सवालिया निशान लगाया है। इनके उपन्यासों में स्त्रियाँ अपने अस्तित्व के लिए निरंतर संघर्ष करती नजर आती हैं। किसी भी देश की आधी आवादी का प्रतिनिधित्व स्त्रियाँ ही करती है लेकिन वह उपेक्षा का पात्र क्यो बन जाती है। यह सवाल सबसे प्रमुख है। अर्थात् उसकी अवहेलना आधी आवादी की अवहेलना है। हिन्दी सवालों के जबाब रजनी गुप्त के उपन्यासों में खोजना आवश्यक है।

4) विषय से संबंधित पूर्वकृत शोध-कार्य :–

समकालीन हिन्दी उपन्यास लेखिकाओं में रजनी गुप्त का विशिष्ट स्थान है। स्पष्ट कथ्य एवं प्रयोगात्मक शिल्प के कारण इनके सभी उपन्यास पाठकों में बेहद लोकप्रिय हैं। तथापि मेरी जानकारी में रजनी गुप्त के उपन्यासों पर देश के किसी भी विश्वविद्यालय में शोधकार्य नहीं हुए हैं। ऐसी स्थिति में प्रस्तावित विषय- 'रजनी गुप्त के उपन्यासों में स्त्री- अस्मिता के सवाल' शोध-कार्य हेतु उपयुक्त और मौलिक है।

5) शोध-कार्य के आधार-ग्रन्थ :–

प्रस्तावित शोध-कार्य अपनी उपजीव्य सामग्री रजनी गुप्त के निम्नलिखित सभी मौलिक उपन्यासों से ग्रहण करेगा:-

1. 'कहीं कुछ और' (2002 ई०)
2. 'किशोरी की आसमाँ' (2005 ई०)

3. ‘एक न एक दिन’ (2008 ई०)

4. ‘कुल जमा बीस’ (2012 ई०)

5. ‘ये आम रास्ता नहीं है’ (2013 ई०)

6. ‘कितने कठघरे’ (2015 ई०)

7. ‘तिराहे पर तीन’ (2022 ई०)

6) शोध-प्रविधि :–

प्रस्तावित शोध-विषय- ‘रजनी गुप्त के उपन्यासों में स्त्री-अस्मिता के सवाल’ पर शोध-प्रबंध निर्माण में मुख्य रूप से आगमन तथा निगमन-प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। शोधोपयोगी सामग्री के संचय हेतु धीवर-प्रविधि का सहारा लिया जाएगा। इस प्रविधि से संचित सामग्रियों का अवलोकन, चयन, विवेचन और विश्लेषण कर शोधोपयुक्त सामग्री स्वीकृत की जाएगी तथा इसी के आधार पर शोध-निष्कर्ष की स्थापना भी की जाएगी। वर्तमान समय में सूचना और प्रोद्यौगिकी के अनेक साधन उपलब्ध हैं, जिसका यथासंभव उपयोग किया जाएगा। साथ ही ऑनलाईन तथा ऑफ लाईन पत्र-पत्रिकाओं से भी अपेक्षित सहयोग प्राप्त किया जाएगा।

7) शोध-संबंधी पूर्वकल्पना एवं उद्देश्य :–

‘रजनी गुप्त के उपन्यासों में स्त्री-अस्मिता के सवाल’ विषय पर शोध-कार्य करते हुए रजनी गुप्त के उपन्यासों का समग्र मूल्यांकन, समकालीन कथा–साहित्य में रजनी गुप्त का वैशिष्ट्य, स्त्री-अस्मिता का अर्थ और सवाल तथा रजनी गुप्त के उपन्यासों में स्त्री-अस्मिता के सवालों की समीक्षा की जाएगी। मुझे विश्वास है कि यह शोध-कार्य ज्ञान के क्षेत्र में अभिवृद्धि करेगा तथा आगे की पीढ़ी के शोधार्थियों-विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इस शोध-कार्य के माध्यम से मौलिक विचारों की स्थापना हेतु मैं दृढ़संकल्पित हूँ।

8) अध्यायों का वर्गीकरण :–

प्रस्तावित शोध-प्रबंध का निम्नलिखित अध्यायों में वर्गीकरण होगाः

प्रस्तावना :–

प्रथम अध्याय: रजनी गुप्त का व्यक्तित्व और कृर्तृत्व

द्वितीय अध्याय: स्त्री अस्मिताः अर्थ, स्वरूप और अवधारणाएँ

तृतीय अध्याय: समकालीन महिला उपन्यासकार और रजनी गुप्त का वैशिष्ट्य

चतुर्थ अध्याय: समकालीन कुछ प्रमुख हिन्दी उपन्यासों में स्त्री-अस्मिता के सवाल

पंचम अध्याय: रजनी गुप्त के उपन्यासों में स्त्री-अस्मिता की अवधारणाएँ।

उपसंहार

9) सहायक ग्रंथ- सूची :–

क) पुस्तकें :–

1) हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1 एवं 2 संपादक- डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल प्रकाशन, वाराणसी, 2015 ई०

2) हिन्दी गद्य साहित्य– डॉ० रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्र० सं० 1956 ई०

3) कथा-विवेचना और गद्यशिल्प- डॉ० रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1972 ई०

4) आधुनिक हिन्दी उपन्यास- संपादक- भीष्म साहनी, जाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली, 1975 ई०

5) हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास- डॉ० बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1996 ई०

6) हिन्दी साहित्य का इतिहास- संपादक- डॉ० नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नई दिल्ली, 1973 ई०

7) हिन्दी उपन्यास-शिवनारायण श्रीवास्तव, सरस्वती मंदिर, वाराणसी, 1968 ई०

8) कला और साहित्य- संपादक- कैलाश दहिया, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली, 2009 ई०

9) 20वीं शती का हिन्दी उपन्यास- पुष्पपाल सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 2016 ई०

10) समकालीन हिन्दी उपन्यास- संपादक- डॉ० वी० के० अब्दुल जलील, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013 ई०

11) भूमंडलीकरणः विचार, नीतियाँ और विकल्प-कमल नयन काबरा, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2018 ई०

12) उपन्यासों के सरोकार- डॉ० ई० विजय लक्ष्मी, राधाकृषण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012 ई०

13) विकास का समाजशास्त्र-श्यामचरण दुबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2001 ई०

14) उपन्यास और लोकतंत्र- डॉ० मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013 ई०

15) भारतीय समाज में प्रतिरोध की परंपरा-मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013 ई०

16) हिन्दी उपन्यास-राष्ट्र और हाशिया- शंभुनाथ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016 ई०

17) हिन्दी उपन्यास का इतिहास प्रो० गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010 ई०

18) उपन्यास की संरचना, प्रो० गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016 ई०

19) अस्मिता का संघर्ष- राशि शरूर, अनुवाद- प्रभात मिलिंद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली; 2022 ई०

20) दलित साहित्य का समाजशास्त्र- डॉ० हरिनारायण ठाकुर, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2012 ई०

21) हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास-सुमन राजे, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004 ई०

22) स्त्री : मुक्ति का सपना सं– प्रो० कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 110002

23) स्त्री–विमश्र का लोकपक्ष– अनामिका, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

24) परिधि पर स्त्री– मृणाल पांडे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

25) उपनिवेश में स्त्री–प्रभाखेतान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

26) स्त्री–संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

27) नारी प्रश्न– सरला महेश्वरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

(ख) पत्र–पत्रिकाएँ :–

1) आजकल-संपादक- सीमा ओझा, नई दिल्ली।

2) कथादेश-संपादक- हरिनारायण, नई दिल्ली।

3) नई ज्ञानोदय-संपदक- लीलाधर मंडलोई नई दिल्ली।

4) वागर्थ-संपादक-शंभुनाथ- कलकता।

5) आलोचना-संपादक- अरुण कमल, नई दिल्ली।

6) युगबोध-संपादक- आनंद प्रकाश, नई दिल्ली।

7) बनासजन-संपादक-पल्लव, नई दिल्ली।

8) परिषद् पत्रिका– स्त्री–विमर्श विशेषांक (अप्रैल– 2003 से मार्च 2004) वर्ष– 43, अंक 1–4

9) परिषद् पत्रिका– अप्रैल– 2004 से मार्च– 2005, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना

शोध निर्देशक

प्रो० (डॉ०) उमेश कुमार
विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधप्रज्ञा :

दिव्या भारती

ग्राम– शुभंकरपुर, पो०– लालबाग
थाना– नगर, जिला– दरभंगा
पैट क्रमांक- 22090132